बीए अर्थशास्त्र

Semester 01 (Paper 01)

मांग विश्लेषण: मांग का नियम तथा मांग की लोच

(Demand Analysis: Law of Demand and Elasticity of Demand)

मांग का अर्थ-

अर्थशास्त्र में मांग किसी वस्तु की वह मात्रा जिसमें एक उपभोक्ता समय की एक निश्चित अवधि में कीमत पर क्रय करने के लिए केवल या योग्य ही नहीं, बल्कि तैयार भी होते हैं।

इच्छा → **अवश्यकता** → **मांग**

मांग की परिभाषायें

प्रो. मिल के अनुसार, "मांग का अभिप्राय किसी वस्तु के उस मात्रा से है जो एक निश्चित मूल्य पर खरीदी जाती है। इस अर्थ में माँग सदा मूल्य से संबंधित होती है"।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

प्रो. पेन्सन के शब्दों में, "मांग केवल एक प्रभावपूर्ण इच्छा है। इसमें तीन बातें सम्मिलित होती है। (a) किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा, (b) उसे क्रय करने के साधन, (c) इन साधनों को वस्तु खरीदने के लिए प्रयोग करने की तत्परता।

बेन्हम के अनुसार, "किसी दिए हुए मूल्य पर वस्तु की मांग उस परिमाण को कहते हैं जो मूल्य पर एक निश्चित समय में क्रय की जाती है"।

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@theeconomicsguru*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

इन परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं की मांग के अंतर्गत पांच तत्व होते हैं-

- किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा।
- वस्तु को क्रय करने के साधन।
- साधनों को व्यय करने की तत्परता।
- वस्तु की इच्छा का कीमत विशेष से संबंधित होना।
- मांग का संबंध किसी विशेष समय से होना।

मांग तथा आवश्यकता में अंतर

आवश्यकता	मांग
इच्छा से आवश्यकता का जन्म होता है।	आवश्यकता से मांग बनती है।
आवश्यकता मूल्य निरपेक्ष होते हैं अर्थात इसका मूल्य से कोई वास्ता नहीं होता।	मांग मूल्य सापेक्ष होती है अर्थात मांग मूल्य पर निर्भर करती है।
आवश्यकता की प्रकृति लगभग स्थायी होती है।	मांग परिवर्तनशील होती है। अर्थात, मूल्य व समय के साथ साथ मांग में परिवर्तन होता रहता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

मांग फलन अन्य मांग को प्रभावित करने वाले तत्व

प्रो. वॉटसन के अनुसार, “किसी बाजार में एक निश्चित समय पर किसी वस्तु का मांग फलन उस वस्तु की खरीदी जा सकने वाले विभिन्न मात्राओं तथा उन मात्रा को निर्धारित करने वाले तत्वों के बीच के संबंध को व्यक्त करता है”।

Dx=f (Px, Pr, Y, T, E, P, Yd)

मांग को प्रभावित करने वाले प्रमुख घटक-

I. वस्तु की अपनी स्वयं की कीमत
II. उपभोक्ता भी आय
III. संबंधित वस्तुओं की कीमतें
- स्थानापन्न या प्रतियोगी वस्तुए
- पूरक वस्तुएँ

IV. उपभोक्ता की रूचि
V. ऋतु में परिवर्तन
VI. जनसंख्या में परिवर्तन
VII. मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन
VIII. राष्ट्रीय धन का वितरण
IX. व्यापार चक्र की अवस्था
X. बचत करने की प्रवृत्ति में परिवर्तन

मांग के रूप/ प्रकार

कीमत मांग (Price Demand)

कीमत मांग का अर्थ वस्तु की कीमत और मांग के बीच संबंध से होता है, जबकि अन्य कारक स्थिर रहते हैं।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

इस प्रकार कीमत मांग सभी प्रायः वस्तुओं की उन मात्राओं से है जो एक निश्चित समय अवधि में एक निश्चित कीमतों पर उपभोक्ताओं द्वारा मांगी जाती है।

वस्तु की कीमत तथा मांग की मात्रा में ऋणात्मक संबंध पाया जाता है।

आय मांग (Income Demand)

आय मांग का अर्थ उपभोक्ता की आय और वस्तु की मांगे जाने वाली मात्रा के बीच का संबंध होता है, जबकि अन्य कारक स्थिर रहते हैं।

आय मांग का अर्थ वस्तुओं एवं सेवाओं की उन मात्राओं से लगाया जाता है जो अन्य बातों के समान रहने की दशा में उपभोक्ता दी गयी समय अवधि में अपने आय के विभिन्न स्तरों पर खरीदने की क्षमता रखता है।

आय के आधार पर वस्तुओं को दो वर्गों में बांटा जाता है।

- श्रेष्ठ अथवा सामान्य वस्तुएँ
- घटिया वस्तुएँ

सामान्य वस्तुएं (Normal Goods):

सामान्य वस्तुओं के संबंध में आय मांग धनात्मक ढालवाला होता है अर्थात उपभोक्ता की आय और वस्तुओं के बीच में धनात्मक संबंध पाया जाता है।

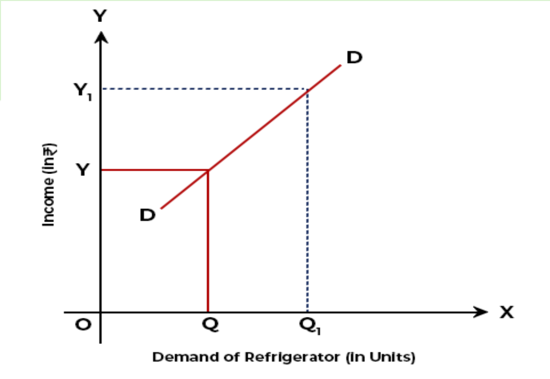

घटिया वस्तुएँ (Inferior Goods)

ऐसी वस्तुएँ जिन्हें उपभोक्ता निम्न दृष्टि से देखता है और आय के साथ गुणात्मक संबंध पाया जाता है। उन्हें वस्तुएं कहते हैं।

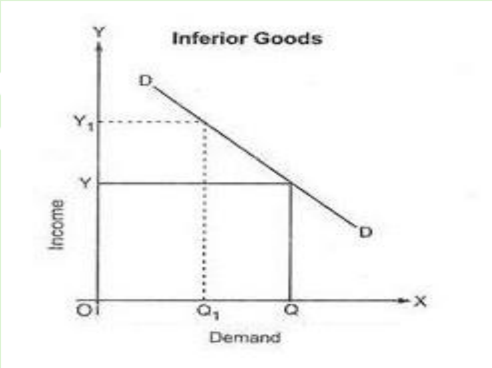

तिरछी या आय मांग

अन्य बातें सामान रहने पर वस्तु X की कीमत में परिवर्तन होने से उसके सापेक्ष संबंधित वस्तु Y की मांग में जो परिवर्तन होता है, उसे आड़ी मांग कहते हैं।

ये संबंधित वस्तुएं दो प्रकार की हो सकती है।

- स्थानापन्न वस्तुयें
- पूरक वस्तुएं

स्थानापन्न वस्तुएं

वे वस्तुएं जो एक दूसरे के बदले एक ही उद्देश्य के लिए प्रयोग की जाती है जैसे चाय या कॉफी।

ऐसी वस्तुओं में जब एक वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है, तब अन्य बातें सामान रहने की दशा में स्थानापन्न वस्तुओं की मांग में भी वृद्धि हो जाएगी।

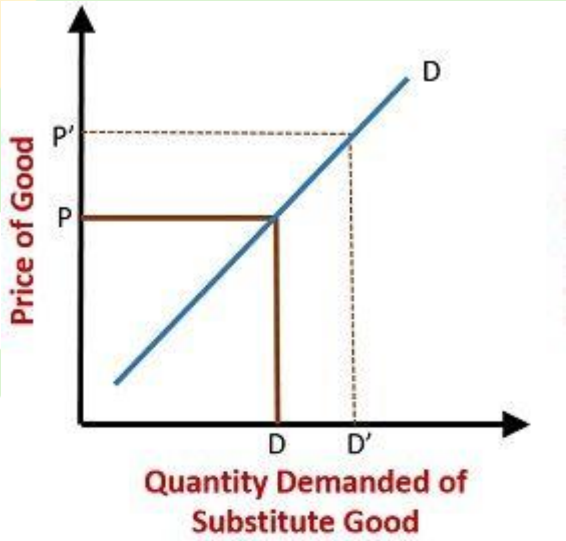

पूरक वस्तुएँ

वे वस्तुएं जो किसी निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक साथ प्रयोग की जाती है, जैसे स्कूटर, पेट्रोल।

पूरक वस्तुओं की कीमत और खरीदी जाने वाली मात्रा में विपरीत संबंध पाया जाता है।

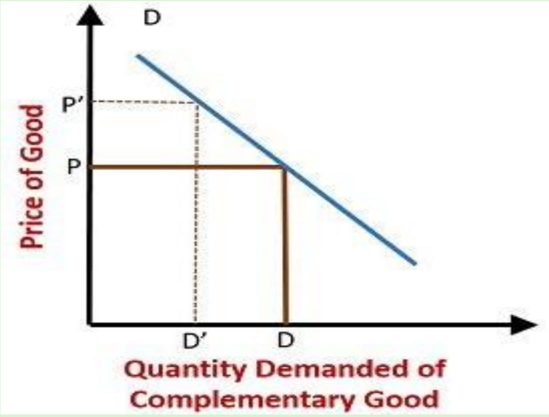

मांग तालिका / अनुसूची

मांग की सारणी वह तालिका है जो विभिन्न मूल्यों पर किसी वस्तु की मांग की गई मात्रा को बताती है।

मांग तालिका दो प्रकार की होती है:

- व्यक्तिगत मांग तालिका
- बाजार मांग तालिका

व्यक्तिगत मांग तालिका (Individual Demand Schedule)

वस्तु की विभिन्न कीमतों पर किसी एक उपभोक्ता की वस्तुओं की मांग को बताने वाले सारणी को व्यक्तिगत मांग सारणी या तालिका कहते हैं।

प्रति इकाई कीमत (₹में)	मांगी गई मात्रा (Q)
10	**10**
8	**20**
6	**30**
4	**40**
2	**50**

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

बाजार मांग तालिका

वस्तु की विभिन्न कीमतों पर संपूर्ण बाज़ार में उपस्थित सभी उपभोक्ताओं की मांग को बताने वाली तालिका को बाजार मांग तालिका कहते हैं।

प्रति इकाई कीमत (₹)	X की मांग	Y की मांग	बाजार मांग (X+Y)
10	10	5	10+5=15
8	20	10	20+10=30
6	30	15	30+15=45
4	40	20	40+20=60
2	50	25	50+25=75

मांग वक्र (Demand Curve)

मांग तालिका को जब रेखा चित्र के रूप में प्रदर्शित किया जाता है, तब उसे मांग वक्र कहते हैं।

मांग वक्र कीमत एवं मांगी गई मात्रा के बीच एक विपरीत संबंध को बताता है।

मांग वक्र दो प्रकार का होता है।

- **व्यक्तिगत मांग वक्र**
- **बाजार मांग वक्र**

व्यक्तिगत मांग वक्र

वह वक्र जो किसी वस्तु की विभिन्न कीमतों पर एक उपभोक्ता द्वारा उस वस्तु की मांग की गई मात्रा ओके विभिन्न संयोग को प्रकट करता है।

प्रति इकाई कीमत (₹में)	मांगी गई मात्रा (Q)
200	**1**
180	**2**
150	**3**
120	**4**
100	**5**

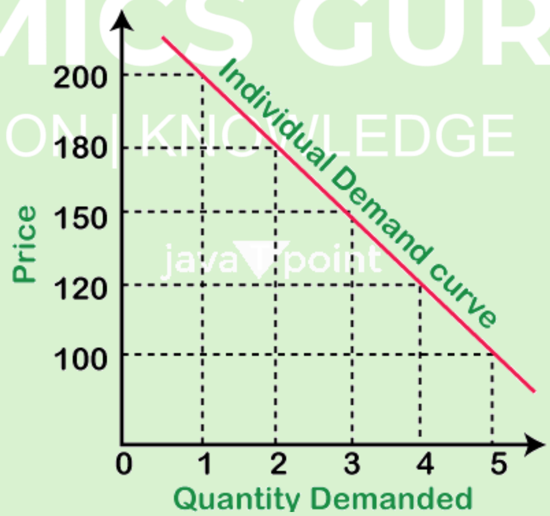

बाजार मांग वक्र

जो वक्र वस्तुओं की विभिन्न कीमतों पर समूचे बाजार की मांग को बताता है उसे बाजार मांगकर कहते हैं।

प्रति इकाई कीमत (₹)	X की मांग	Y की मांग	बाजार मांग (X+Y)
10	10	5	10+5=15
8	20	10	20+10=30
6	30	15	30+15=45
4	40	20	40+20=60
2	50	25	50+25=75

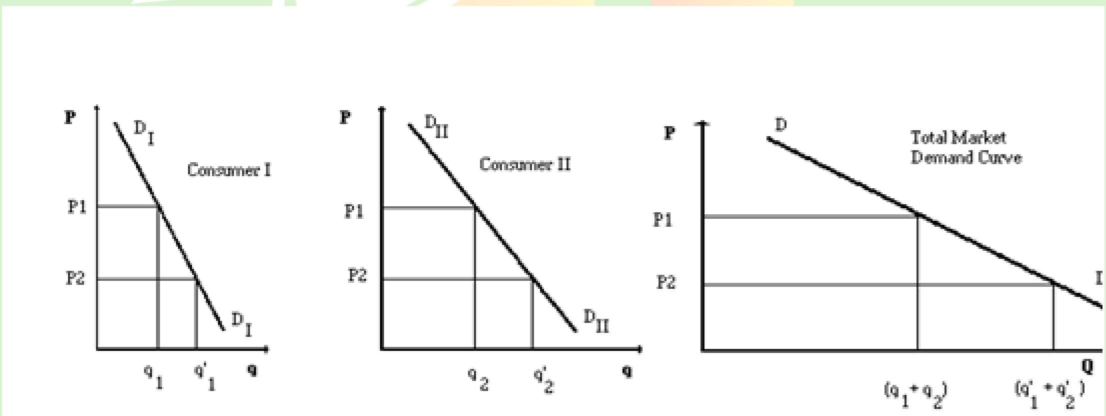

मांग का नियम (Law of Demand)

इसे खरीद का पहला नियम भी कहते हैं। जो वस्तु की मांग तथा वस्तु के मूल्य के बीच परस्पर संबंध को बताता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

मांग का नियम बताता है कि **'अन्य बातें समान रहने पर वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर वस्तु की मांग कम हो जाती है तथा वस्तु की कीमत कम होने पर उसकी मांग बढ़ जाती है'।**

इस प्रकार वस्तु की ***मांग तथा कीमत में ऋणात्मक संबंध*** पाया जाता है।

वस्तु X की मांग तालिका

प्रति इकाई कीमत	मांग की मात्रा
10	10
8	20
6	30
4	40
2	50

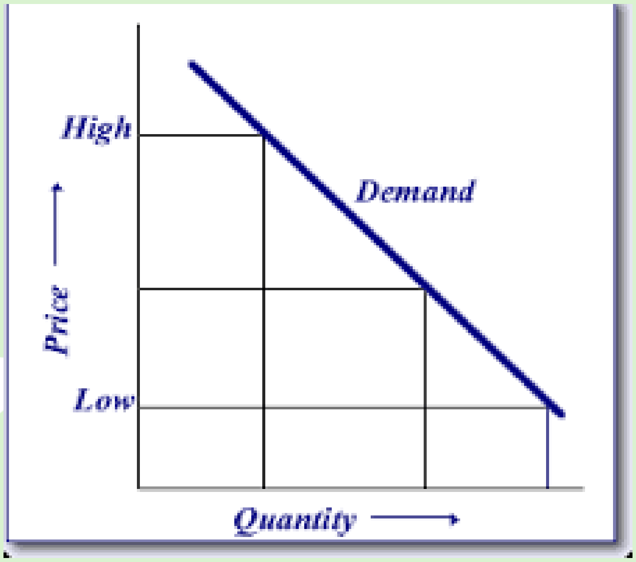

मांग के नियम की मान्यताएँ

- उपभोक्ता की आय स्थिर रहनी चाहिए
- उपभोक्ता की रूचि, आदत और प्रचलन फैशन में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए
- संबंधित वस्तुओं की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए
- वस्तु की कोई नई स्थानापन्न वस्तु बाजार में नहीं होनी चाहिये
- भविष्य में वस्तु के कीमत में परिवर्तन की संभावना नहीं होनी चाहिए

मांग के नियम के अपवाद

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

- भविष्य में कीमत वृद्धि की संभावना
- सब प्रतिष्ठासूचक वस्तुएँ
- उपभोक्ता की अज्ञानता
- गिफ़्फ़िन का विरोधभास

मांग में परिवर्तन (Change in Demand)

मांग में परिवर्तन की दो स्थितियां होती है

(1)मांग वक्र पर संचलन **(2) मांग वक्र का खिसकाव**

मांग वक्र का संचलन (Movement along a Demand Curve)

अन्य बातों के समान रहने पर केवल कीमत में होने वाले परिवर्तन के कारण जब मांग में परिवर्तन होता है तो ऐसी स्थिति में मांग वक्र समान रहता है, परंतु वह ऊपर या नीचे की ओर संचालित होता है।

इस प्रकार मांग में दो प्रकार से परिवर्तन होता है

1. मांग का विस्तार
2. मांग का संकुचन

मांग का विस्तार (Extension of Demand)

अन्य बातों के समान रहने पर जब **वस्तु की कीमत में कमी** होने से वस्तुओं की अधिक मात्रा खरीदी जाती है। तब उपभोक्ता अपने उसी मांग वक्र पर दाएँ या नीचे की ओर स्थानांतरित होता है। इस स्थिति को मांग का विस्तार कहते हैं।

कीमत (₹)	मांग की मात्रा (इकाई)
15	20
10	30

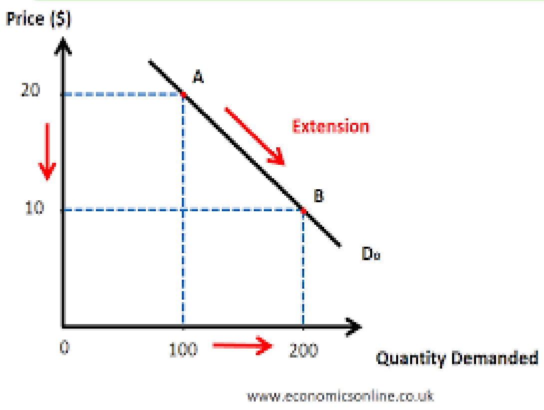

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION

मांग का संकुचन (Contraction of Demand)

अन्य बातों के समान रहने पर जब **वस्तु की कीमत अधिक** हो जाने के कारण वस्तु की कम मात्रा खरीदी जाती है, तब उपभोक्ता अपनी उसी मांग वक्र पर बाएँ या ऊपर की ओर स्थानांतरित होता है। इस स्थिति को मांग का संकुचन कहते हैं।

कीमत (₹)	मांग की मात्रा (इकाई)
15	20
20	10

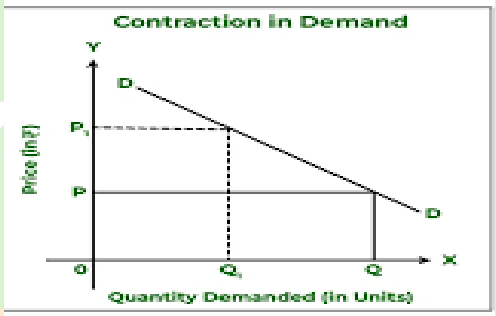

मांग वक्र का खिसकाव (Shifting of Demand Curve)

मांग वक्र के खिसकाव का अर्थ है मांग वक्र का अपनी आरंभिक स्थिति से बाईं या दाईं ओर खिसक जाना।

जब वस्तु की कीमत सामान रहें अर्थात वस्तुओं की कीमत में कोई परिवर्तन न होने पर भी अन्य कारणों के कारण जब मांग में परिवर्तन होता है तो ऐसी स्थिति में मांग वक्र का खिसकाव उत्पन्न होता है।

इस प्रकार का परिवर्तन दो प्रकार से होता है।

- **मांग में वृद्धि**
- **मांग में कमी**

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

मांग में वृद्धि (Increase in Demand)

जब वस्तु की मांग में उसकी कीमतों के अलावा अन्य तत्वों जैसे आय, फैशन आदि में परिवर्तन होने से परिवर्तन होता है अर्थात वृद्धि होती है तो ऐसी स्थिति में मांग वक्र बाएँ से दाएँ ओर स्थानांतरित होता है। जिसे मांग में वृद्धि कहते हैं।

कीमत (₹)	मांग की मात्रा (इकाई)
15	20
15	30

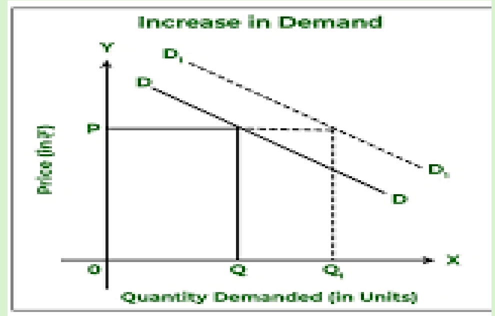

मांग में वृद्धि के कारण

- जब उपभोक्ताओं की आय में वृद्धि होती है।
- जब प्रतिष्ठापन वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है।
- जब पूरक वस्तु की कीमत में कमी आती है।
- जब फैशन या ऋतु में परिवर्तन वस्तु के लिये उपभोक्ताओं की रुचि तथा प्राथमिकता में परिवर्तन लाता है।
- फिर क्रेताओं की संख्या में वृद्धि होने पर।
- जब भविष्य में वस्तु की कीमत बढ़ने की संभावना हो।

मांग में कमी (Decrease in Demand)

जब वस्तु की कीमत के अतिरिक्त किन्हीं अन्य कारणों से उसी कीमत पर वस्तु की कम मात्रा या कम कीमत पर वस्तु की उतनी ही मात्रा खरीदी जाती है तो उसे मांग में कमी कहते हैं।

इस स्थिति में मांग वक्र दाएँ से बाएँ स्थानांतरित होता है तथा मांग वक्र नीचे की ओर स्थानांतरित होता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION

कीमत (₹)	मांग की मात्रा (इकाई)
15	20
15	15

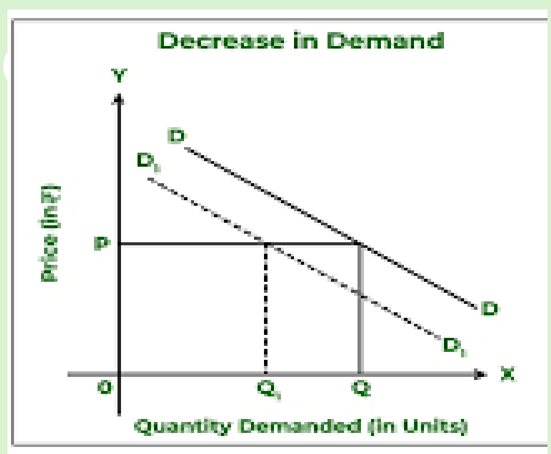

मांग में कमी के कारण

- उपभोक्ता की आय में कमी।
- प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत में कमी।
- पूरक वस्तुओं की कीमत में वृद्धि।
- फैशन या जलवायु में परिवर्तन के कारण वस्तु के लिए उपभोक्ता की रुचियाँ प्राथमिकता में कमी।
- क्रेताओं की संख्या में कमी।
- निकट भविष्य में वस्तु की कीमत कम होने की संभावना।

मांग की कीमत लोच/ कीमत सापेक्षता

(Price Elasticity of Demand)

मांग के नियम किसी वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप उस वस्तु की मांग में होने वाले परिवर्तन की दिशा के विषय में बताता है। अत: इसे **गुणात्मक कथन** कहते हैं।

जबकि इससे यह ज्ञात नहीं होता कि *कीमत में परिवर्तन होने से वस्तुओं की मांग में कितना परिवर्तन हुआ।*

अतः किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी मांग में जो परिवर्तन आता है, इसके मांग की मूल्य सपेक्षता या मांग की लोच कहते हैं।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

परिभाषायें

बेंहम के अनुसार, "यह विचार कीमत में थोड़े से परिवर्तन के परिणाम स्वरुप मांग की मात्रा में होने वाले परिवर्तन की मांग है"।

श्रीमती जॉन रॉबिन्सन के अनुसार, "मांग की लोच कीमत में थोड़े से परिवर्तन का परिणाम स्वरुप खरीदी गई मात्रा के आनुपातिक परिवर्तन में कीमत के आनुपातिक परिवर्तन से भाग देने प्राप्त होती है"।

$$\text{मांग की लोच} = \frac{\text{मांग में आनुपातिक/ प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक/ प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$Ed = \frac{\Delta q/q}{\Delta p/p} = \frac{\Delta q}{\Delta p} \times \frac{q}{p}$$

मांग की कीमत लोच की श्रेणियां

मांग लोच की पांच श्रेणियां होती है:

1. सापेक्षता लोचदार मांग
2. सापेक्षता बेलोचदार मांग
3. इकाई लोचदार मांग
4. पूर्णतः बेलोचदार मांग
5. पूर्णतः लोचदार मांग

सापेक्षता लोचदार मांग (Relatively Elastic Demand)

जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने के फलस्वरूप उसकी मांग में अधिक आनुपातिक परिवर्तन हो जाता है। तब ऐसी वस्तु की मांग को सापेक्षता लोचदार मांग कहते हैं। $(E_d > 1)$

$$\frac{\Delta Q}{Q} > \frac{\Delta P}{P}$$

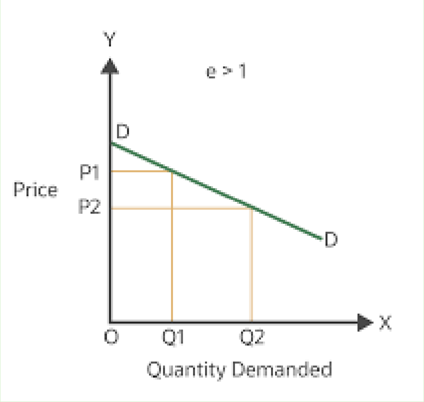

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION

सापेक्षता बेलोचदार मांग (Relatively Inelastic Demand)

जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी मांग में कम आनुपातिक परिवर्तन होता है तब ऐसी वस्तुओं की मांग को सापेक्षता बेलोचदार मांग कहते हैं। हैं। $(E_d < 1)$

$$\frac{\Delta Q}{Q} < \frac{\Delta P}{P}$$

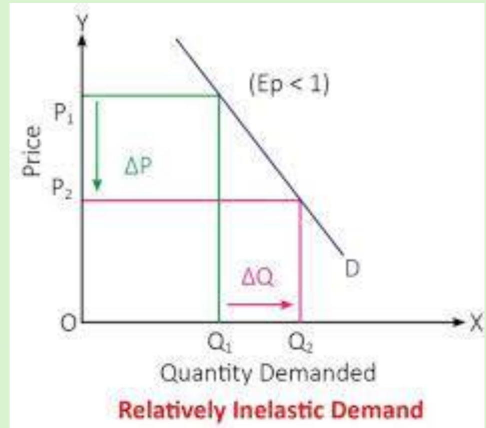

इकाई लोचदार मांग (Unit Elastic Demand)

जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उसकी मांग में भी उसी अनुपात में परिवर्तन होता है, तब ऐसी वस्तुओं की मांग को इकाई लोचदार मांग कहा जाता है। हैं। $(E_d = 1)$

$$\frac{\Delta Q}{Q} = \frac{\Delta P}{P}$$

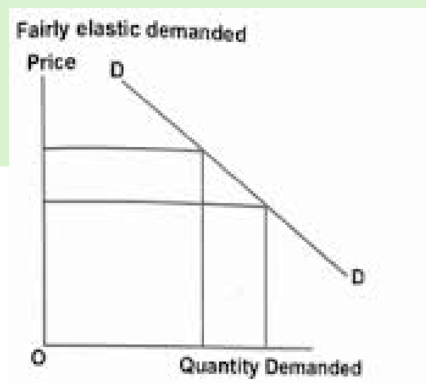

पूर्ण बेलोचदार मांग (Perfectly Inelastic Demand)

जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी मांग में कोई परिवर्तन नहीं होता, तो ऐसी मांग को पूर्णतः बेलोचदार मांग कहते हैं। $(E_d = 0)$

$$\frac{\Delta Q}{Q} = 0$$

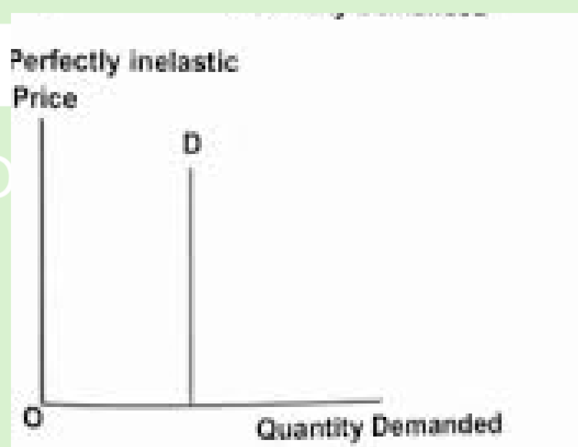

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION

पूर्णता लोचदार मांग (Perfectly Elastic Demand)

जब किसी वस्तु की कीमत में नगण्य परिवर्तन या बिल्कुल परिवर्तन ना होने पर भी मांग में अत्यधिक परिवर्तन होता रहता है। तब ऐसी वस्तु की मांग को पूर्णतः लोचदार मांग कहा जाता है।

$(E_d = \infty)$

$$\frac{\Delta P}{P} = 0$$

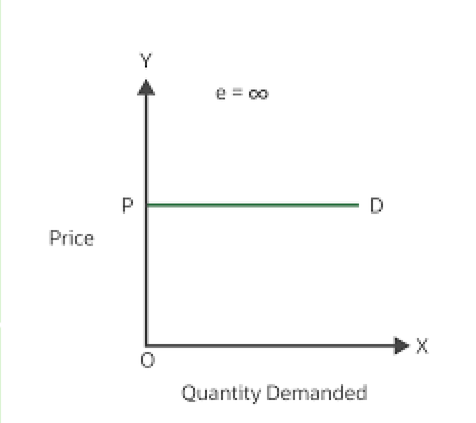

मांग की कीमत लोच के निर्धारक तत्व

वस्तु की प्रकृति

अनिवार्य वस्तुओं की मांग बेलोचदार होती है।

सामान्य वस्तुओं की मांग लोचदार होती है।

विलासिता की वस्तुओं की मांग अधिक लोचदार होती है।

स्थानापन्नो की उपलब्धता

जिन वस्तुओं के स्थान पर अन्य वस्तुओं का प्रयोग संभव है, उसकी मांग लोचदार होती है।

वस्तुओं का विभिन्न प्रयोग

जिन वस्तुओं के विभिन्न उपयोग होते हैं, उनकी मांग लोचदार होती है क्योंकि कीमत में कमी होने पर इन वस्तुओं का उपभोग बढ़ जाता है।

THE ECONOMICS GURU

वस्तुओं का उपभोग स्थगित होना

जिन वस्तुओं का उपभोग कुछ समय के लिये स्थगित किया जा सकता है, जैसे टेलीफोन आदि उसकी मांग लोचदार होती है।

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

उपभोक्ता की आदत

जिन वस्तुओं की उपभोक्ता को आदत पड़ती है उसकी मांग बेलोचदार होती है।

उपभोक्ता की आय

कम आय वाले व्यक्तियों द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं की मांग पर या अधिक कीमत साबित होती है। और अमीरों द्वारा प्रयोग किए जाने वाली वस्तुओं की मांग कम लोचदार होती है।

मांग की कीमत लोच को मापने की विधियां

मांग की कीमत लोच की मापने की प्रमुखता चार विधियाँ है-

1. व्यय विधि (Expenditure Method)
2. आनुपातिक विधि (Proportionate Method)
3. चाप लोच विधि (Arc Method)
4. बिन्दुरेखीय विधि (Point Elasticity of Demand)

व्यय विधि (Expenditure Method)

मार्शल द्वारा प्रतिपादित इस विधि के अनुसार,

किसी वस्तु के ऊपर कीमत परिवर्तन के पहले और बाद में व्यय की जाने वाली कुल राशि की तुलना की जाती है और यह पता लगाया जाता है कि कुल व्यय की राशि पहले से अधिक है या कम है या बराबर है।

इसमें मांग की कीमत लोच की निम्नलिखित तीन श्रेणियाँ होती है-

कीमत लोच इकाई की बराबर (ed=1)

यदि कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप वस्तु पर व्यय की गई कुल मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं होता अर्थात कुल व्यय स्थिर रहता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

मांग की कीमत लोच इकाई से अधिक (ed>1)

किसी वस्तु पर किए गए कुल व्यय की राशि यदि उसकी कीमत की कमी के साथ बढ़ जाती है तथा कीमत में वृद्धि के साथ घट जाती है तो मांग की कीमत लोच इकाई से अधिक होती है।

मांग की कीमत लोच इकाई से कम (ed<1)

किसी वस्तु पर किए गए कुल व्यय की राशि यदि कीमत में कमी का साथ कम हो जाती है तथा कीमत में वृद्धि के साथ अधिक हो जाती है तो मांग की कीमत लोच कम होती है।

अनुपातिक या प्रतिशत रीति (Proportionate Method)

प्रो. फ्लक्स ने इस विधि का उपयोग किया है इस रीति के अंतर्गत मांग में अनुपातिक परिवर्तन या प्रतिशत परिवर्तन को कीमत में आनुपातिक परिवर्तन से भाग देते हैं।

सूत्र-

$$\text{मांग की लोच} = \frac{\text{मांग में आनुपातिक/ प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक/ प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$Ed = \frac{\Delta q/q}{\Delta p/p} = \frac{\Delta q}{\Delta p} \times \frac{q}{p}$$

चाप लोच रीति (Arc Method)

यह रीति प्रतिशत विधि का एक सुधरा हुआ रूप है।

इस विधि में हम p के स्थान पर आरंभिक और परिवर्तित कीमतों का औसत लेते हैं अर्थात $(\frac{p+p1}{2})$ ।

इसी प्रकार q के स्थान पर $(\frac{q+q1}{2})$ अर्थात आरम्भिक और परिवर्तित मंगों का औसत लेते है:

$$\text{मांग की लोच} = \frac{(p+p1)}{(q+q1)} \times \frac{\Delta q}{\Delta p}$$

मांग की बिंदु लोच या रेखागणितीय विधि
(Point Elasticity of Demand or Geometrical Method)

एक ही मांग वक्र के विभिन्न बिंदुओं पर मांग की लोच भिन्न भिन्न होती है। बिंदु लोच से अभिप्राय है कि वस्तुओं की कीमत में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों से वस्तुओं की मांग पर पड़ने वाले प्रभाव को मापा जाता है। इस कारण एक ही मांग वक्र के अलग अलग बिंदुओं पर मांग की लोच अलग अलग होती है।

क्योंकि इस रीति के अनुसार मांग की लोच की माप किसी एक विशिष्ट बिंदु पर ही की जाती है, इसलिए मांग की लोच मामले की इस रीति को बिन्दु कहा जाता है।

इस रीति का प्रतिपादन **प्रो. बोल्डिंग** ने किया।

सूत्र

$$\text{मांग की लोच} = \frac{\text{मांग रेखा पर किसी बिंदु से मांग रेखा का नीचे का भाग}}{\text{ग रेखा पर किसी बिंदु से मांग रेखा का ऊपर का भाग}}$$

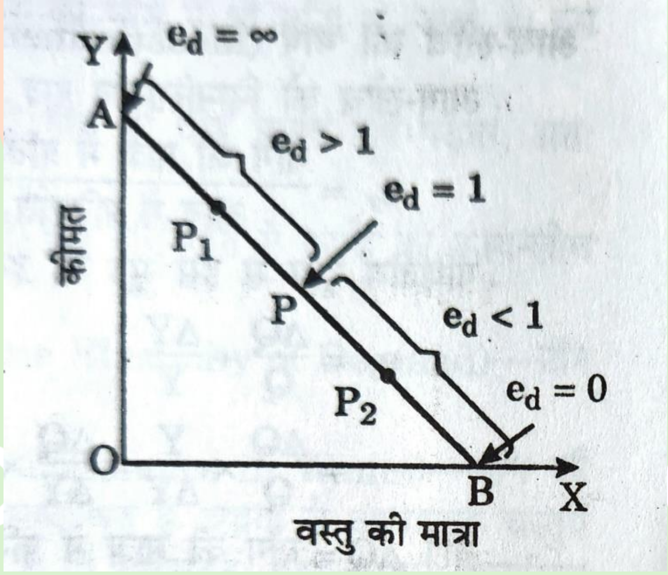

मांग की आय लोच (Income Elasticity of Demand)

अन्य तत्वों के समान रहने पर उपभोक्ता की आय में परिवर्तन होने से वस्तुओं की मांग में परिवर्तन होता है।

साधारणता उपभोक्ता की आय बढ़ने से वस्तुओं की मांग बढ़ती है और आय घटने से वस्तु की मांग घटती हैं। है।

उपभोक्ता की आय को बढ़ाने की मांग में किस अनुपात में परिवर्तन आता है, इसको मांग की आय लोच ey द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

वॉटसन के अनुसार, "मांग की आय लोच अभिप्राय आय में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के परिणामस्वरूप मांगी गई मात्रा में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के अनुपात से है"।

सूत्र,

$$\text{मांग की लोच} = \frac{\text{मांग में आनुपातिक/ प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{आय में आनुपातिक/ प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$Ed = \frac{\Delta q/q}{\Delta y/y} = \frac{\Delta q}{\Delta y} \times \frac{q}{y}$$

मांग की आड़ी लोच (Cross Elasticity of Demand)

मांग की आड़ी तथा तिरछी लोच के विचार का विकास मूर ने अपनी पुस्तक **"सिंथेटिक्स इकोनॉमिक्स"** में किया था, किंतु इस विचार की विस्तृत व्याख्या **रॉबर्ट त्रिफिन** ने की।

किन्ही दो संबंधित वस्तुओं की मात्रा और कीमत में होने वाले परिवर्तन में परस्पर संबंध होता है। एक वस्तु की कीमत में परिवर्तन दूसरी वस्तुओं की मांग की मात्रा में परिवर्तन का कारण बन सकता है।

चाय की कीमत में परिवर्तन होने पर साधारणतया कॉफी की मांग में परिवर्तन आ जाता है तथा कार की कीमत के परिवर्तन से पेट्रोल की मांग में परिवर्तन आ जाता है।

एक वस्तु की मांग की मात्रा दूसरे वस्तु की कीमत के परिवर्तन का पारस्परिक संबंध मांग की आड़ी लोच द्वारा मापा जा सकता है।

इस प्रकार मांग की आड़ी लोज किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने के फलस्वरूप वस्तु की मांग में होने वाले परिवर्तन की माप है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

मांग की आड़ी लोच की कुछ प्रमुख परिभाषाएं

फॉर्गुसन के अनुसार, “मांग की आड़ी लोच Y वस्तु की कीमत में होने वाले सापेक्ष परिवर्तन के कारण संबंधित वस्तु X की मांग में होने वाला आनुपातिक परिवर्तन हैं”।

सूत्र,

$$\text{मांग की लोच} = \frac{\text{वस्तु } X \text{ की मांग में आनुपातिक/ प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{वस्तु } Y \text{ की कीमत में आनुपातिक/ प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$Ed = \frac{\Delta X/X}{\Delta Py/Py}$$

मांग की कीमत लोच का महत्त्

1. कीमत सिद्धांत में महत्त्व
    - कीमत के निर्धारण में महत्त्व।
    - एकाधिकारी के लिए मांग की कीमत सापेक्षता का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।
    - कीमत विविध में मांग कीमत सापेक्षता का विचार बहुत उपयोगी है।
    - संयुक्त पूर्ति वाली वस्तुओं का मूल्य निर्धारण के लिए मांग की लोच को समझना आवश्यक है।

2. उत्पत्ति के विभिन्न साधनों का पुरस्कार निर्धारित करने में भी मांग की कीमत लोच की धारणा सहायक है।
3. सरकार के लिए मांग की कीमत लोच का विशेष महत्त्व है।
4. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की भावना को समझने के लिए माँग की लोच का विशेष प्रयोग किया जाता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यादा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@theeconomicsguru*